प्रमाणित किया जाता है कि "वाल्मीकि रामायण में नारी – समीक्षात्मक परिशीलन" शीर्षक शोध-प्रबन्ध कु० मधुरिमा अस्थाना के अनुशीलन-विश्लेषण और अन्वेषण के परिणाम हैं । इन्होंने पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर द्वारा शोध-कर्ताओं के लिए निर्धारित समय का अनुपालन करते हुए पूर्ण समय देकर मेरे निर्देशन में अनुसंधान कार्य पूरा किया है । मुझे जहाँतक विदित है, इनका कार्य मौलिक है ।

कु० मधुरिमा अस्थाना शील और व्यवहार की दृष्टि से पूर्वान्चल विश्वविद्यालय की उपाधि-अभ्यर्थिनी की योग्यता रखती हैं ।

निर्देशिका
(डा०श्रीमती माधुरी सिंह)
रीडर, संस्कृत विभाग
श्री अग्रसेन महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
आजमगढ़ ।

अग्रसारित –

Principal
Sri Agrasen Mahila (P.G.) Mahavidyalaya
AZAMGARH
08/10/01

पुरोवाक्

आदि कवि वाल्मीकि संस्कृत साहित्य के ऐसे जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं जिनकी काव्य-प्रभा से संस्कृत का सम्पूर्ण काव्य जगत दीप्तिमान है । संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रति मेरा अनुराग अपनी शिक्षा के प्रारम्भ से ही रहा । आदि कवि की भाषा सारल्य, वर्णन वैविध्य, छन्दों, अलंकारों का सरस-सहज प्रयोग एवं विविध-प्रकार के पात्रों के सन्दर्भ में भिन्न भिन्न रसों की अवतारणा मुझे सदा आदि कवि के महाकाव्य " रामायण "की ओर आकृष्ट करती रही । महाकवि तुलसीदास के"रामचरित मानस"में बालकाण्ड के प्रारम्भ में " वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ" में कवीश्वर वाल्मीकि की वन्दना से मेरी जिज्ञासा वाल्मीकि के रामायण के सम्बन्ध में और तीव्र होगयी । गोस्वामी तुलसीदास का नारियों के प्रति प्रसिद्ध कथन-" ढोल गवाँर शूद्र पशु, नारी । ये सब ताड़न के अधिकारी " सुनकर जहाँ मन में क्षोभ हुआ वहीं यह कामना भी हुई कि "आदि कवि वाल्मीकि के" विचारों को भी जाना जाय ।

संस्कृत की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मैंने अपनी इच्छा परमादरणीया गुरुजी डॉ0माधुरी सिंह, सम्प्रति, रीडर(संस्कृत) श्री अग्रसेन महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आजमगढ़ से व्यक्त की । उन्हीं की कृपा एवं आशीर्वाद से मुझे "वाल्मीकि रामायण में नारी समीक्षात्मक - परिशीलन" इस विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने की अनुमति पूर्वान्चल विश्वविद्यालय जौनपुर ने दी ।

वाल्मीकि रामायण अनेकशः रामकथाओं का मूल-स्रोत है । स्वयं वीणा-पाणि सरस्वती ही मानो आदि कवि के कण्ठ से रामायण के रूप में निःसृत होकर जन-मानस को ब्रह्मानन्द सहोदर काव्यानन्द से उल्लसित करती हैं । आदिकवि की काव्य निर्झरिणी का उत्स करुणा है । यह मूर्धिता करुणा भी क्रौंची(नारी) की विरह-व्यथा से उद्भूत होकर सहृदय कवि वाल्मीकि के अन्तःकरण को रुधिराप्लावित कर गई ।

"मां निषाद - - - - काम मोहितम्"

जैसा छन्द उसी करुणा का प्रतिफलन था । मानव तो मानव देवता ब्रह्मा भी इससे अत्यन्त प्रभावित हुए बिन नहीं रह सके । रामायण का पर्यवसान भी संभवतः इसीलिए दुखान्त है । वाल्मीकि की इस करुणा ने रामायण की सीता तथा मन्दोदरी जैसी नारियों को सम्पूर्ण काव्य-जगत में अपूर्व महनीयता एवं गौरव प्रदान किया, जिसका स्पष्ट प्रभाव भवभूति के "एकोरसः करुण एव" पर परिलक्षित होता है । पाश्चात्य कवि शेली भी करुणाको ही प्रधान मानते हुए कहता है - "Our sweetest songs are those that tell of saddest thought."

पाश्चात्य विद्वान जैकोबी, सिलवालेवी तथा ए०बी०कीथ प्रभृति ने "रामायण" की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है । वास्तव में आदि कवि का मूल उद्देश्य शिवेतर की क्षति तथा लोकमंगल का सृजन कर "रामादिवत् प्रवर्तितव्यं, न रावणादिवत्" का प्रवर्तन करना था । इसीलिए उन्होंने नारी के मुख्यतः दो स्वरूपों का चित्रण किया है -

1-जो लोक-मंगल की भावना से अनुप्राणित हैं

2-जो लोक-विनाश हेतु कटिबद्ध हैं ।

कौशल्या, सीता, मन्दोदरी, तारा, स्वयंप्रभा, त्रिजटा, सरमा आदि नारियाँ यदि प्रथमवर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं तो कैकेयी, मंथरा, शूर्पणखा तथा अशोकवाटिका की रक्षिकाएं द्वितीय-वर्ग का । मैंने प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में रामायण की इन्हीं प्रतिनिध नारियों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया है । सप्त अध्यायों में विभक्त इस शोध-प्रबन्ध का विषय वस्तु के रूप में विवरण निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है -

प्रथम अध्याय में नारी सम्बन्धी प्रचलित विविध मान्यताओं का उल्लेख किया गया है । पुत्री, भार्या, माता, कुलटा तथा साध्वी आदि रूपों में नारी की प्रशंसा अथवा निन्दा का मूल्यांकन करने का प्रयास हुआ है ।

द्वितीय अध्याय में नारी के कार्य-क्षेत्र का विवरण प्रस्तुत किया गया है । इसमें गृहिणी के रूप में पति, गुरुजनों, देवताओं, ब्राह्मणों अतिथियों तथा पशु-पक्षियों के प्रति उसके कर्तव्य पालन का विवेचन करते हुए उसके सामाजिक कार्य-क्षेत्र को उद्घाटित किया गया है । तृतीय अध्याय विवाह पर प्राप्त सूचनाओं के आधार पर विधिवत तथ्यों को प्रस्तुत करता है । इसमें विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण, पिता का उत्तरदायित्व, कन्यादान का महत्त्व, वधू-वरों के वरणीय गुण, शुभ-लक्षणों आदि पर विचार किया गया है ।

चतुर्थ अध्यायमेंकौटुम्बिक साहचर्य को उद्घाटित किया गयाहै । पति-कुल में नारी, पुत्रवधू और सासु-श्वसुर का परस्पर व्यवहार, दाम्पत्य जीवन, आश्रमवासी दम्पति आदि विषयों पर प्राप्त सामग्री के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

पंचम अध्याय में रहन-सहन सम्बन्धी विषयों का विवेचन प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है । निवास-स्थान, सूतिका-गृह, यात्राएं तथा दान वस्त्राभूषण, स्नान-तिलक, पुष्प-प्रियता, अन्न-पान, भोजन सम्बन्धी शिष्टाचार, भोजन में धार्मिकता की भावना तथा भोजन में अस्पृश्यता जैसे बिन्दुओं को भी उद्घाटित किया गया है ।

षष्ठ अध्याय में नारियाँ विविध रूप में चित्रित हैं । जैसे मानवी नारियाँ, ऋषिकुल की नारियाँ, माताएं, पुत्रियाँ, पुत्र-वधुएं, परिचारिकाएं तथा मानवेतर में उपास्य वरद-देवियाँ, अप्सराएँ, नदियों का देवी-रूप, नारी की भूमिका पशु-पक्षी में, वानरी-स्त्रियाँ, राक्षसी-स्त्रियाँ तथा अन्य पर भी विधिवत् विचार किया गया है ।

सप्तम् अध्याय उपसंहार के रूप में संक्षेप में अध्ययन का मूलसार है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध प्रस्तुतीकरण के इस महान् वाणी - यज्ञमें अपना अपूर्व सहयोग प्रदान करने वाले लोक-कल्याण -साहित्यिकों, विद्वानों एवं उदाराशय शुभेच्छु जनोंको सादर नमन करते हुए मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं ।

सर्वप्रथम अपने शोध-प्रबन्ध की निर्देशिका, परमपूज्या, श्रद्धास्पद डा०श्रीमती माधुरी सिंह, रीडर(संस्कृत) श्री अग्रसेन महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय (आजमगढ़) की चिर-ऋणी हूं, जिन्होंने अध्ययन हेतु प्रोत्साहन, प्रेरणा एवं आर्थिक सहयोग तथा मार्ग-दर्शन करते हुए मेरा मार्ग आलोकित किया । गुरु-स्वरूपिणी उस महिमामयी मातृशक्ति की अपूर्व कृपा के अभाव में संभवत: मैं शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत न कर पाती । महाविद्यालय की प्राचार्या परमादरणीया डॉ०श्रीमती शारदासिंह के प्रति भी विनयावनत हूं, जिनकी अहैतुकी कृपा से मैं यह शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकी हूं । इसी क्रम में डा० गिरीशचन्द्र उपाध्याय, रीडर(संस्कृत) श्री गान्धी स्नातकोत्तर महाविद्यालय मालटारी-आजमगढ़ अपने श्रेष्ठ गुरुवर के प्रति भी आभारी हूं जिन्होंने समय समय पर अपने मूल्यवान सुझावों से विषय की गूढ़ता को सरल किया ।

मेरी परम-पूज्या पार्वती स्वरूपिणी माता जी(श्रीमती चन्द्रवटी अस्थाना) एवम् शिव स्वरूप सर्वदा पूज्य मेरे जनक श्री ओम प्रकाश अस्थाना को मेरा सर्वदा प्रणाम है जिनके प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्धन से मेरा श्रम सफल होसका ।

अपने सहोदरों श्री निर्भय अस्थाना एवं श्री शैलेन्द्र अस्थाना तथा बहनों श्रीमती कनकलता अस्थाना, श्रीमती स्नेहलता श्रीवास्तवा एवं श्रीमती अंजना अस्थाना की भी मैं प्रशंसा करती हूं जिन्होंने अपने अमूल्य सहयोग से इस दुष्कर कार्य को भी सुकर बना दिया । इन्हें धन्यवाद देकर इनकी महत्ता कमनहीं कर सकती क्योंकि सहोदर होने के कारण ये सभी मेरे हृत्य में विराजमान हैं ।

अपने टंकक श्री ओम प्रकाश अस्थाना को विशेष रूप से धन्यवाद देती हूं जिनके अथक प्रयास से यह शोध-प्रबन्ध प्रस्तुतीकरण के योग्य होसकाहै । अंत में श्रद्धा एवं निष्ठापूर्वक रामकथा के अनन्य गायक आदि कवि वाल्मीकि के प्रति मैं सदा प्रणत हूं जिनकी "रामायण" से समस्त संस्कृत ही नहीं अपितु समग्र भारतीय वाङ्मय अनुप्राणित है । -

कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकि यस्य रामायणी कथा ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधव: ।।

मधुरिमा अस्थाना

वाल्मीकि रामायण में नारी - समीक्षात्मक परिशीलन

प्रथम अध्याय -नारी सम्बन्धी मान्यताएं -

1- कन्या सम्बन्धी
2- भार्या सम्बन्धी
3- माता की प्रशंसा
4- साध्वी स्त्री की प्रशंसा
5- नारी-निन्दा
6- निन्दा प्रशंसा का मूल्यांकन

अध्याय 2 -नारी कार्य-क्षेत्र

क-नारी का कौटुम्बिक कार्य-क्षेत्र

गृहक्षेत्र में नारी का कार्य, पशु-पक्षियों की सेवा, पति तथा गुरुजनों की सेवा-सुश्रूषा, सन्तान परिपालन, धर्मकार्य, कौटुम्बिक धर्मकृत्य, यज्ञ-देवपूजन, ब्राह्मण भोजन, अतिथि-पूजन, दान-व्रत-साधना, कौटुम्बिक अभ्युदय के लिए नारी का कार्य— कुटुम्ब के लोगों के लिए ।

ख-सामाजिक कार्य-क्षेत्र

स्वार्थ-त्याग, समाज कल्याण के लिए तपस्या तथा अन्य-कार्य
शासन-तन्त्र में नारी, कुटुम्ब के लोगोंकी जन कल्याण के लिए प्रेरणाएं, राजमाताएं, राज्य कल्याण में राजकुल की नारियों का सहयोग ।
युद्ध और नारी - युद्ध के प्रति नारियों की धारणा, नारी युद्ध का एक कारण, प्रतिशोध की भावना ।

तृतीय अध्याय विवाह

विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण
कन्या के पिता का उत्तरदायित्व
कन्यादान का महत्व
बहुभार्यात्व, विविध प्रकार के विवाहों का उदाहरण
दहेज
वरण के अधिकारी
वधू-वरों के वर्ण्य गुण
शुभ-लक्षण इत्यादि
विवाह के लिए वर्ण्य कन्याएं

चतुर्थ-अध्याय — कौटुम्बिक साहचर्य

पतिकुल में नारी
पुत्रवधू और सास श्वसुर का परस्पर व्यवहार
दाम्पत्य जीवन -पातिव्रत्य, पति को कर्तव्योन्मुख करने की प्रवृत्ति ।
1- विरह में नारी, संतान प्राप्ति, पत्नी के अधिकार
2- आश्रमवासी दम्पति, सपत्नियों का साहचर्य
भ्रातृभार्याएं, माता का महत्व, पूजन तथा तप ।
3- कौटुम्बिक शिष्टाचार, प्रसूति एवं अशुद्धि सम्बन्धी मान्यताएं, दुखों में नारी ।

पंचम अध्याय - रहन-सहन

निवासस्थान, सूतिकागृह, यात्राएं तथा दान, वस्त्रों में विविधता, आभूषण केशरचना केशप्रसाधन, स्नान-तिलक, पुष्प-प्रियता, अन्नपान भोजन सम्बन्धी शिष्टाचार, भोजन में धार्मिक भावना, भोजन में अस्पृश्यता ।

षष्ठं अध्याय: नारियाँ विविध चरित्र में

मानवी नारियाँ
क-ऋषिकुल की नारियाँ
ख- माताएं
ग- पुत्रियाँ
घ- पुत्र-बधुएं
च-परिचारिकाएं

मानवेतर
क- उपास्य वरद-देवियाँ
ख- अप्सराएं
ग- नदियों का देवी-रूप
घ- नारी की भूमिका
ड0-पशुपक्षी
च-वानरी स्त्रियां
छ-राक्षसी नारियाँ तथा अन्य

सप्तम अध्याय-
उपसंहार - प्रस्तुत शोध के समस्त अध्ययन का सार रूप में उल्लेख किया जायेगा ।